लगवाना चाहिए । एन्टीसीरम देने के 15 दिन बाद पशुओं को वैक्सीन (प्रतिरोधक टीका) लगवाने से अधिक लाभ होता है ।

संक्रामक रोगों की रोकथाम के सभी ढंग इस रोग की रोकथाम के लिए प्रयोग होने चाहिए । मुख्यत: निम्न बातों को ध्यान रखना अति आवश्यक है :-

- *रोग फैलने की सूचना तुरन्त नजदीकी पशु चिकित्सक को दें।*
- *सभी पशुओं को प्रतिरोधक टीका समय रहते लगवा लें ।*
- *बीमार पशु को तुरन्त अन्य पशुओं से अलग कर दें और उसके खाने-पीने का प्रबन्ध अलग से करें ।*
- *जहां-जहां पशु की लार गिर रही हो वहां पर कपड़े धोने का सोड़ा या चूना डालते रहें अथवा फिनाईल का घोल छिड़क दें।*
- *मृत पशु को या तो जला दें या गहरा गढ्ढा खोदकर पर्याप्त चूने की मात्रा डाल कर गाड़ दें ।*

आलेख

डॉ. आलोक कुमार शर्मा

सह प्राध्यापक

पशु चिकित्सा एवम् पशु विज्ञान महाविद्यालय,
चौ. स. कु. हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय,
पालमपुर-176 062

पशुओं में गलघोटू रोग
व
उससे बचाव

पशु चिकित्सा एवम् पशु विज्ञान प्रसार विभाग

पशु चिकित्सा एवम् पशु विज्ञान महाविद्यालय,
चौ. स. कु. हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय,
पालमपुर-176 062

पशुओं में गलघोटू रोग व उससे बचाव

छूत के बैक्टीरिया (जीवाणु) द्वारा फैलने वाला यह एक अत्यन्त भयानक संक्रामक रोग है । देश में लगभग 40,000 गौ तथा भैंस जाति के पशु प्रतिवर्ष इस रोग से मरते हैं । जुगाली करने वाले पशु और विशेषकर भैंसों पर इसका प्रकोप अत्याधिक होता है । यह रोग पशुओं में कभी-कभी इतने भंयकर रूप में फैलता है कि रोग-ग्रसित इलाकों में कृषि कार्य चौपट हो जाता है । कमजोर एवम् युवावस्था के पशुओं को यह रोग अधिक लगता है और 80 से 90 प्रतिशत रोग ग्रसित पशु इससे मर जाते हैं ।_यह बीमारी वर्षा ऋतु के आने पर प्रारम्भ होती है । आमतौर पर एक से तीन दिन में इसके लक्षण प्रकट होते हैं । एक साथ बहुत से पशु बीमार पड़ जाते हैं ।

लक्षण : पशुओं में इस रोग की तीन अवस्थाएं हैं । एकाएक पशु का तापमान 104 से 108 डिग्री फारेनहाइट (40-42 डिग्री सैंटीग्रेड़) पहुंच जाता है। खाने पीने में अरूचि, पशु का सुस्त हो जाना, कानों का नीचे लटकना, पहले कब्ज, बाद में दस्त लगना, रम्भाना, दान्त पीसना आदि पहली अवस्था में प्रमुख लक्षण है । कभी कभी रोग की अति तीव्रता के कारण, बिना लक्षण दिखे 6 से 8 घण्टे के अन्दर पशु की मृत्यु हो जाती है ।

कुछ पशुओं में रोग की दूसरी अवस्था/ लक्षण देखने को मिलते हैं । इस अवस्था में जीभ का सूज कर मुंह से बाहर निकल आना, मुंह से लार बहना, कष्टप्रद श्वसन प्रक्रिया, बैचनी आदि मुख्य लक्षण है । जीभ तथा गले की सूजन अधिक बढ़ने पर पशु को सांस लेना बहुत ही कठिन हो जाता है । जिसके फलस्वरूप पशु को सांस लेते समय घुर-घुर की आवाज करता है (इसलिए इस रोग को गलघोटू या घोटुआ बुखार भी कहते है) । रोग की इस अवस्था में पशु 12 से 36 घण्टे में दम घुटने से मर जाता है ।

इस रोग की की एक अन्य अवस्था में न्यूमोनिया जैसे लक्षण प्रकट होते हैं । श्वास गहरी व जल्दी-जल्दी आने लगती है । पशु थोड़ा खांसता है व उसकी नाक से श्वेत रंग की बबूलेदार स्त्राव निकलता है जो बाद में गाढ़ा हो कर रस्सी की तरह नाक से लटकता हुआ प्रतीत होता है इस अवस्था में 1 से 7 दिन के भीतर ही मृत्यु हो जाती है ।

रोग का फैलना : यह रोग घर पर अथवा चरागाह पर लग सकता है । रोगग्रस्त पशु जब चरागाह पर चरने जाता है तो उसके मल-मूत्र आदि से वहां की घास दूषित हो जाती है । एक स्वस्थ पशु तक उस दूषित घास के द्वारा इस रोग के कीटाणू पहुंच जाते हैं । इसके अतिरिक्त पशुओं का पारस्परिक सम्पर्क, दूषित आहार, परिचारकों तथा दूषित व नमीदार जलवायु भी रोग को फैलाने में सहायक होते हैं ।

इलाज : रोग इतनी तीव्रता से फैलता है कि इलाज की व्यवहारिक गुंजाईश नहीं रहती । एक बार लक्षण प्रकट होने पर इस महामारी की कोई चिकित्सा नहीं हो पाती और रोग्रस्त पशु प्राय मर जाते हैं । एन्टीसीरम यदि उपलब्ध हो तो अन्त:-शिरा इन्जैक्शन देने से काफी लाभ हो सकता है । सल्फाडिमिडिन सोडियम नामक दवा के साथ-साथ पशु को एन्टीसीरम देने से पशुओं का बचाव हो सकता है लेकिन यह मंहगा इलाज है । अत: परहेज का टीका लगवाना ही पशु पालक के हित में है । कुछ अन्य एन्टीबायटिक दवाईयां भी इस रोग के लिए उपयोग में लाई जाती है ।

बचाव व रोकथाम : बचाव के लिए प्रतिवर्ष बरसात के मौसम के शुरू होने से पहले पशुओं को सामूहिक रूप से गलघोटू के टीके लगवा देने चाहिये। पशु पालन विभाग के द्वारा सामूहिक टीकाकरण का प्रबन्ध किया जाता है । ये टीके पशु चिकित्सक से सम्पर्क करके लगवाए जा सकते हैं । इनके प्रयोग से पशु में 6 माह या अधिक समय तक रोग रोकने की शक्ति बनी रहती है । रोगी पशु के सम्पर्क में आये सभी पशुओं को एन्टीसीरम का इन्जैक्शन